**Indian J. Soc. & Pol. 09 (02) : 117-120: 2022** **ISSN : 2348-0084 ( PRINT)**
**First Published Online 31 JULY 2022** **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

# सामाजिक उद्यमिता

**देवेन्द्र मिश्र**[1]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, आर0आर0पी0जी0 कालेज अमेठी, उ0प्र0,भारत

**ABSTRACT**

***सामाजिक उद्यमिता का कार्य करने वाले व्यक्ति सामाजिक उद्यमी कहलाते हैं साामजिक उद्यमी अपनी पैनी नजर से समाज में व्याप्त किसी समस्या की पहचान करता है। समाज में विपणन की तीव्र वृद्धि लगातार हमारे जीवन को बदल रही है। नतीजतन उद्यमियों की बाजार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती है, क्योंकि इन्हें परिवर्तन के एजेन्ट के रूप में देखा जाता है। जो परिवर्तन आर्थिक रूप से आधारित है, प्रभाव दूर–दूर तक पहुँच रहे हैं सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जैसे समाज के अन्य पहलुओं को प्रभावित करते हैं। यही कारण है कि उद्यमी जिम्मेदारी लेने और अधिक अवसरों का पता लगाने के लिए अपने व्यापार को बनाने और विस्तार करने के लिए व्यवसाय जोखिम लेने के इच्छुक हैं। सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्यम उद्यमिता के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करते हैं। लोगों को अव्यक्त कौशलों और प्रतिभाओं को व्यावसायिक कार्यों में लगाया जा सकता है। जिसे एक छोटा सा व्यवसाय शुरू करने के लिए थोड़ी पूँजी लगा कर और लगभग शून्य औपचारिकताओं के साथ वास्तविक रूप दिया जा सकता है।***

***KEYWORDS:*** *उद्यमिता, विपणन, सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम, कौशल विकास*

'किसी भी राष्ट्र के विकास में सामाजिक उद्यमिता की बहुत महत्ता है, खासकर भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ पर आर्थिक तथा सामाजिक समस्याएं हैं। सामाजिक उद्यमी न केवल औद्योगिक क्षेत्र में बल्कि देश के कृषि एवं सेवा क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामाजिक उद्यमिता का कार्य करने वाले व्यक्ति सामाजिक उद्यमी कहलाते हैं सामाजिक उद्यमी अपनी पैनी नजर से समाज में व्याप्त किसी समस्या की पहचान करता है। उसके बाद सामाजिक उद्यमिता के सिद्धान्तो का सहारा लेते हुए वह सामाजिक परिवर्तन करके उस समस्या का समाधान निकालता है। बढ़ती जनसंख्या, बेरोजगारी, गरीबी आदि समस्याओं से निपटने के लिए सामाजिक उद्यम लगातार लघु उद्योगों व व्यापारों को स्थापित करता है। आर्थिक शक्ति बढ़ाने क्षेत्रीय असमानताएँ एकाधिकारियों द्वारा शोषण इत्यादि कई समस्याओं का समाधान उद्योगों को विकसित करके हो सकता है जो कि एक सफल उद्यम ही दे सकता है। लगातार बदलाव तथा नवीनीकरण सामाजिक उद्यम की एक जरूरत है तथा संसार की अर्थव्यवस्था में बने रहने के लिए जरूरी है।''

सामाजिक उद्यमिता व्यक्तियों, समूहों, स्र्टाट–अप कम्पनियों या उद्यमियों द्वारा एक दृष्टिकोण है, जिनमें वे सामाजिक, सांस्कृतिक या पर्यावरणीय मुद्दों के समाधान विकसित निधि और कार्यान्वित करते हैं 'भारतीय उद्योग परिसंघ' ने सामाजिक उद्यमिता पर एक प्रतियोगिता की घोषणा की है।

- यह प्रतिस्पर्धा मौजूदा सामाजिक उद्यमों और ऐसे छात्रों के लिए है जिनके विचार उद्यमशील होने के साथ ही समाज केन्द्रित तथा समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने वाले है।
- 'भारतीय उद्योग परिसंघ' सलाहकार और परामर्श सम्बन्धी प्रक्रियाओं के माध्यम से भारत के विकास उद्योग, सरकार एवं नागरिक सामज के बीच साझेदारी के लिए अनुकूल वातावरण बनाने का काम करता है।
- सामाजिक उद्यमिता–वाणिज्यिक उद्यम के विचार को धर्मार्थ (बिंतपजंइसम) गैर लाभकारी संगठन के सिद्धान्तों के साथ मिश्रित करने वाली अवधारणा है।
- सामाजिक उद्यमिता का कार्य करने वाले सामाजिक उद्यमी कहलाते है। सामाजिक उद्यमी अपनी–अपनी नजर से समाज में व्याप्त किसी समस्या उद्यमिता के सिद्धान्तों का सहारा लेते हुए वह समाधान निकालता है।
- इसमें सामाजिक असमानताओं को दूर करने हेतु कम लागत वाले उत्पादों एवं विकास पर जोर दिया जाता है।
- सामाजिक उत्तरदायित्व और भ्मैळ (पर्यावरण, सामाजिक एवं शासन) निवेश के साथ–साथ सामाजिक उद्यमिता की अवधारणा भी तेजी से विकसित हो रही है।
- सामाजिक उद्यमिता आम तौर पर गरीबी, विकास जैसे क्षेत्रों में स्वैच्छिक क्षेत्र से जुड़े लक्ष्यों को आगे बढ़ाने का प्रयास करती है।
- आधुनिक समाज में सामाजिक उद्यमिता का एक परोपकारी रूप प्रदान करती है। जो समाज को मिलने वाले लाभों पर केन्द्रित है। यदि किसी व्यक्ति का व्यवहार या उद्देश्य परोपकारी है तो वह स्वयं के बजाय अन्य लोगों की खुशी और कल्याण के लिए चिंता दिखाते हैं। सीधे शब्दों में कहें तो उद्यमिता सामाजिक पूंजी को इस तरह बदल देती है, जो समाज को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।
- सामाजिक उद्यमिता से जुड़े प्रमुख व्यक्तियों में पाकिस्तानी अख्तर हमीद खान और बांग्लादेशी मोहम्मद युनुस शामिल है। जो दक्षिण एशिया में सामाजिक उद्यमिता के नेता है।

***1: Corresponding Author***

• युनुस ग्रामीण बैंक के संस्थापक थे, जिसने एशिया, अफ्रिका और लैटिन अमेरिका के कई विकासशील देशों में नवप्रवर्तको का समर्थन करने के लिए माइक्रोक्रेडिट की अवधारणा का बीड़ा उठाया था। उनके प्रयासों के लिए उन्हें शांति का नोबेल पुरस्कार भी मिला था।

• यह अवधारणा आर्थिक पहल को सफल बनाने में मद्द करती है इसके तहत किए जाने वाले सभी निवेश सामाजिक एवं पर्यावरणीय मिशन पर केन्द्रित होते हैं।

• सामाजिक उद्यमियों को सामाजिक नवप्रवर्तनकर्ता (वबपंस प्ददवअंजवते) भी कहा जाता है। वे परिवर्तन के एजेंट के रूप में कार्य करते है और अपने अभिनय विचारों का उपयोग करके महत्वपूर्ण परिवर्तन करते हैं। वें समस्याओं की पहचान करते है और अपनी योजना के माध्यम से उनका समाधान करते हैं।

• सामाजिक उद्यमिता के उदाहरणों में–गरीब बच्चों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम शुरू करना पिछड़े क्षेत्रों में बैंकिंग सेवाएं प्रदान करना और महामारी के कारण अनाथ हुए बच्चों की मद्द करना शामिल है।

**सामाजिक उद्यमिता की भारत में आवश्यकता–**

भारत को सामाजिक समस्याओं से सम्बन्धित विभिनन विषयों जैसे– स्वच्छता, प्राथमिक स्वास्थ्य, कन्या भ्रूण हत्या, कार्बन उत्सर्जन आदि के समाधान हेतु ऐसे अनेक सामाजिक उद्यमियों की आवश्यकता है जो इन समस्याओं का अभिनय समाधान प्रदान कर सकें। ये समस्याएं समाज में लगातार बनी हुयी है और इसलिए इसका तत्काल समाधान करना आवश्यक है।

सामाजिक उद्यमिता एक विशेष प्रकार की गतिविधि है, जो दान और व्यवसाय के चौराहे पर स्थित है। इसमें लाभ अर्जित करना और समाज में सबसे अधिक दबाव वाली समस्याओं को हल करने या कम करने में इसे पुनः स्थापित करना शामिल है। सफलता को समाज में सुधार के लिए अच्छे अभ्यास, विनिमय करने योग्य विचारी एवं ज्ञान की आवश्यकता होगी। सामाजिक उद्यमिता में सामाजिक मुद्दों को हल करने वाली सफलता को चलाने के लिए कड़ी मेहनत, सादा और सरल व्यवहार होना चाहिए। सफलता प्राप्त करने के लिए एक उद्यमी के कारक और लक्षण निम्न दिखाए गये है।

• एक उद्यमी की ताकत और कमजोरियों को जानना भी व्यवसाय में सफलता ला सकता है वैसे भी, लोगों में व्यापार में सफल होने की इच्छा में ताकत और कमजोरियां सक्रिय भूमिका निभा रही है। यह वह क्षमता है जो उद्यमियों को असफलताओं और गलतियों को दूर करना और आगे बढ़ना है। इसलिए एक उद्यमी को व्यायाम करना चाहिए कि व्यवसाय में बेहतर प्रदर्शन कैसे करें, आत्मविश्वास बढ़ाएं और अध्ययन कौशल ज्ञान और क्षमता में सुधार कैसे करें। जीवन या व्यापार में भले ही उद्यमी व्यवसाय में महत्व और संभावित भूमिका निभा रहे हो। इससे पहले उद्यमियों को आत्म–मूल्यांकन करना पड़ता है, जैसे ताकत कमजोरियों अवसरों और खतरों। यह लोगों के दृष्टिकोण को और भी बेहतर बनाने के लिए बदल सकता है।

• किसी व्यक्ति के लिए व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के लिए एक लक्ष्य सेटर बहुत महत्वपूर्ण है। ध्यान केन्द्रित रहे और लक्ष्य निर्धारित करने के लिए संतुलन के लिए प्रयास करें हर किसी के लिए उद्यमी को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि लक्ष्य स्पष्ट है और ठोस मापनीय लक्ष्यों के साथ प्राप्य दृष्टि प्राप्त करें।

• उद्यमियों के लिए एक अवसर महत्वपूर्ण है, वे हमेशा अवसरों की तलाश में रहते है। चाहे वे पहले से व्यवसाय में हैं या अभी शुरू कर रहे हैं, उनके पास एक ऐसा दृष्टिकोण है जो अवसरों की अपेक्षा करता है, और उन अवसरों को खोजने के लिए आवश्यक समय का निवेश करते हैं, जो उनके लिए काम करेंगे, यहां तक की जो पहले से ही एक सफल व्यवसाय चला रहे हैं वे नई सम्भावनाओं के लिए खुले रहते हैं।

• व्यवसाय में समस्याएं हमेशा होती है। नया विचार व्यापार की आय बढ़ाने और सफलता प्राप्त करने के अवसरों को हासिल करके अवसर ला सकता है। इसलिए एक उद्यमी को येाजना में अच्छा होना चाहिए और निर्णय लेने के लिए रणनीतिक रूप से प्रबंधन करना चाहिए और हमेशा किसी व्यवसाय में उत्कृष्टता के लिए प्रयास करना चाहिए। एक उद्यमी के पास नए विचारों को साझा करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए महान सोच और रचनात्मक विचार होना चाहिए, जो विचार उन्हें अपने व्यवसाय में सफल बना सके।

• एक उद्यमी की विशेषता कड़ी मेहनत करने और कार्यस्थल में जिम्मेदारी संभालने की इच्छा है। उद्यमियों को पता होना चाहिए कि एक नया व्यवसाय काम करने तथा लान्च (शुरू) करने के लिए अपना समय कैसे प्रतिबंधित करना है। इसलिए वे तीव्रता के साथ अपनी क्षमता को पूरी तरह से लागू कर रहे है तथा व्यापार में अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिए पूरा ध्यान केन्द्रित कर रहे।

बिल ड्रेटन ने सन् 1980 ई0 में 'अशोक' की स्थापना की, जो एक ऐसा संगठन है, जो स्थानीय सामाजिक उद्यमियों का समर्थन करता है ड्रेटन अपने कर्मचारियों को चार गुणों की तलाश करने के लिए कहता है–

1. रचनात्मकता
2. उद्यमशीलता की गुणवत्ता
3. विचार का सामाजिक प्रभाव
4. नैतिक फाइबर

रचनात्मकता के दो भाग होते है–

(अ) लक्ष्य निर्धारण

(ब) समस्या समाधान

सामाजिक उद्यमी इतने रचनात्मक होते हैं कि उनके पास एक विजन होता है कि वे क्या करना चाहते हैं और उस विजन को कैसे पूरा किया जाय।

ड्रेटन का कहना है कि उद्यमियों के दिमाग में यह दृष्टि होती है कि जब उनका विचार काम पर होगा तो समाज कैसे अलग होगा और वे तब तक नहीं रुकते जब तक कि वह विचार न केवल एक जगह पर काम पर हो बल्कि पूरे समाज के काम पर हो।'

सामाजिक प्रभाव मापता है कि मूल संस्थापक के चले जाने के बाद विचार स्वयं परिवर्तन का कारण बन पायेगा, यदि किसी विचार में आन्तरिक मूल्य है तो एक बार लागू होने पर ये पहले उद्यमी के करिश्माई नेतृत्व के बिना भी परिवर्तन का कारण बनेगा।

नैतिक फाइबर महत्वपूर्ण है, क्यों कि दुनिया को बदलने वाले नेताओं को भरोसेमंद होना चाहिए। ड्रेटन ने अपने कर्मचारियों को यह सुझाव देकर इसका वर्णन किया है कि वे ऐसी स्थिति की कल्पना करते हैं जो उन्हें डराती है और फिर उम्मीदवार को उनके साथ स्थिति में रखती है। अगर वे इस परिदृश्य में सहज महसूस करते है तो उद्यमी के पास नैतिक फाइबर हेाता है।

उद्यमियों की एक विशिष्ट विशेषता यह है कि वे परितर्वन करने का श्रेय शायद ही कभी लेते हैं, वे इस बात पर जोर देते हैं कि वे जो बदलाव लाए है, वह उनके आस–पास के सभी लेागों के कारण हैं वे भी भावनाओं से प्रेरित होते हैं, वे मुख्य रूप से लाभ कमाने के लिए नहीं बल्कि दुख को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं।

मो0 युनुस इस विशेषता के बारे में कहते हैं–''वह अन्य सभी प्रतिस्पर्धियों के साथ बाजार में प्रतिस्पर्धा करता है और समााजिक उद्देश्यों के एक समूह से प्रेरित होता है। यह व्यवसाय में होने का मूल कारण है।

## सामाजिक उद्यमिता के भारत में उदाहरण

'प्रवाह' तथा 'कम्यूनिटी' ये दोनों संगठन युववाओं में नेतृत्व की क्षमता का विकास करने हेतु उन्हें प्रशिक्षित करते हैं वर्ष 2020 में इन दोनों संगठनों ने 'श्वाब फाउन्डेशन' तथा 'जुबिलेण्ट भारतीय फाउण्डेशन' द्वारा स्थापित 'सोशल इंटर प्रेन्योर आफ द ईयर' पुरस्कार जीता है।

वर्ष 1993 में स्थापित प्रवाह संगठन भारत में मनोसामाजिक हस्तक्षेपो के माध्यम से युवा परिवर्तनकारियों के विकास में योगदान दे रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप ये युवा अधिक समावेशी समाज के निर्माण में सक्षम होते है।

कम्यूनिटी जिसकी स्थापना वर्ष 2008 में की गयी थी प्रवाह जैसे संगठनों की सामूहिकता पर जोर देती है।

भारत में इस प्रकार के संगठन एवं व्यावसायिक मॉडल अत्याधिक सामाजिक होने के साथ–साथ संघारणीय भी है।

## सामाजिक उद्यमिता की चुनौतियाँ

चूँकि सामाजिक उद्यमिता की दुनिया अपेक्षाकृत नई है, इसलिए इस क्षेत्र में तल्लीन करने वालों के सामने कई चुनौतियाँ हैं सबसे पहले सामाजिक उद्यमी भविष्य की समस्याओं की भविष्यवाणी करने उन्हें सम्बोधित करने और रचनात्मक रूप से प्रतिक्रिया देने का प्रयास कर रहे।

उत्सुक निवेशकों की कमी सामाजिक उद्यमिता में दूसरी समस्या की ओर ले जाती है। एल्किंगटन और हार्टिगन ने कहा है कि–''वाणिज्यिक और सामाजिक उद्यमों के बीच वेतन अन्तर कमरे में हाथी जैसे बने रहना है जिससे की दीर्घकालिक सफलता और व्यवहार्यता प्राप्त करने की क्षमता कम हो जाती है।'' उद्यमों की शुरुआत में सामाजिक उद्यमियों और उनके कर्मचारियों अक्सर कम या गैर मजदूर वेतन दिया जाता है। यद्यपि सामाजिक उद्यमी दुनिया का सबसे अधिक दबाव वाले मुद्दो से निपट रहे है , उन्हें उसी समाज में संदेह और कंजूसी का भी सामना करना होगा जिसकी वे सेवा करना चाहते हैं।

बाजार की वास्तविकताओं और ग्राहक की अंतदृष्टि पर आधारित योजना का निर्माण तथा उनका दृढ़तापूर्वक अनुसरण करना कठिन है। क्योंकि सामाजिक उद्यमियों को एक बेहतर व्यवसाय योजना विकसित करने में चार्टर्ड एकाउंटेंट तथा वरिष्ठ उद्यमियों के मद्द की आवश्यकता होती है।

- निधियों की कमी या संस्थापकों के सीमित नेटवर्क के कारण योजनाएं एक विशिष्ट भौगोलिक सीमा तक ही सीमित रह जाती है।
- वर्ष 2013 का कंपनी अधिनियम जो कम्पनियों को अपने औसत शुद्ध लाभ का 2 प्रतिशत कारपोरेट सामाजिक दायित्व के रूप में दान करने के लिए बाध्य करता है, ने सामाजिक उपक्रमों में निवेश को उत्प्रेरित किया है। परन्तु सही तरीके से इसके लाभ को प्राप्त करने के लिए इसे और अधिक समन्वित किये जाने की आवश्यकता है।
- उद्यमिता विकास कार्यक्रमों की सफलता प्रशिक्षण देने वालों पर भी निर्भर करती है। अतः अच्छे संस्थानों से उचित व्यक्तियों का चुनाव करना चाहिए।
- उद्यमिता कार्यक्रमों से संबधित संस्थाओं को नौकरशाही से दूर रखना चाहिए तथा सरकारी तंत्र को चुस्त दुरुस्त बनाना चाहिए।
- वर्तमान उद्यमियों और कामगारों के लिए उचित प्रशिक्षण व अभिप्रेरण की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- नए सामाजिक उद्यमियों को सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं व प्रेरणाओं की जानकारी दी जानी चाहिए।
- उद्यमिता विकास कार्यक्रमों की चलाने वाली संस्थाओं की समय–समय पर जांच पड़ताल होनी चाहिए इन संस्थाओं को मान्यता लेना अनिवार्य होना चाहिए। तथा मान्यता प्राप्त करने के नियम और शर्तें कड़े होना चाहिए।

इसके अलावां प्रभाव मूल्यांकन की भी आवश्यकता होती है सभी निवेशक परिणाम देखना चाहते हैं परन्तु परिणाम को उस स्थिति में कैसे मापा जा सकता है जब हस्तक्षेप की समयावधि बहुत अधिक हो।

- ग्रामीण विकास ट्रस्ट कृषक भारती कोआपरोटिव लिमिटेड द्वारा वर्ष 1999 में स्थापित एक राष्ट्रीय संगठन है। जो गरीबों एवं अमीरों के समाज में हाशिए पर रह रहे समुदायों की आजीविका में एक स्थायी सुधार लाने के लिए कार्य करता है।
- ग्रामीण विकास ट्रस्ट सामाजिक उद्यमिता को एक बड़े पैमाने पर सामाजिक परिवर्तन लाने की प्रक्रिया के रूप में देखता है।

उपर्युक्त बिन्दुओं के आलोक में निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि–

समय के साथ–साथ सामाजिक उद्यमिता भी विकसित हुयी है और इसने अनेक जीवन और अनेक नवीन लाभदायक विचार दिए है, जो सामाजिक समस्याओं का समाधान करते हैं।

देश में जहाँ पहले से ही अमूल, बेयरफुट कालेज, ग्रामीण बैंक आदि जैसे सफल उदाहरण मौजूद है वहीं यदि अधिक प्रभावशाली और सामाजिक उद्यम में उपयुक्त निवेश सुनिश्चित किया जाय तो ऐसे ही कई और सामाजिक रूप से प्रासंगिक उद्यम स्थापित किये जा सकते हैं। जिससे समाज एवं देश का आर्थिक एवं सामाजिक विकास हो सकता है।

**REFERENCES**

https://www.sanskritias.com

https://hi.m.wikipedia.org

शाह अमित ''आत्म विश्वास से भरा आत्म निर्भर भारत'' राजस्थान पत्रिका जयपुर

Vedanthadesikan G. & Padmanathan P (2016) "*Rural Entrepreneurship and Indian Scenario*"

Ilahi Saud (2019) "Rural Entrepreneurship: The current scenario in India" *International Journal of science and research* volume **8.**

Sathya I. (2019) "Rural Entrepreneurship in India research Exprorer-*A Blind Review and Referred quarterly International Journal* volume 7.

*कुरुक्षेत्र:* ग्रामीण विकास को समर्पित विशेषांक नंवबर 2020 उद्यमिता और स्टार्टअप्स

Mahammad Shahid & Mahammad Irshad "DESCRIPTIVE STUDY ON PRADHAN MANTHRI MUDRA YOJANA (PMMY)" *International Journal of Latest Trends in Engineering and Technology* Special Issue SACAIM 2016, e-ISSN: 2278-621x.

https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://www.mudra.org.